IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वैदिक साहित्य: स्वास्थ्य, आयुर्वेद, अनुष्ठान, विज्ञान और प्रौद्योगिकी

परमेश्वर नन्द
शोधच्छात्र व्याकरणविभाग
केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः
श्रीरणवीरपरिसर कोट-भलवाल
जम्मू-कश्मीर।

प्रस्तावना - वैदिक साहित्य से तात्पर्य उस विपुल साहित्य से है जिसमें वेदसंहिता, ब्राह्मण-ग्रन्थ, आरण्यक एवं उपनिषद् शामिल हैं। वर्तमान समय में वैदिक साहित्य ही हिन्दू धर्म के प्राचीनतम स्वरूप पर प्रकाश डालने वाला तथा विश्व का प्राचीनतम् स्रोत है। वैदिक साहित्य को 'श्रुति' कहा जाता है, क्योंकि (सृष्टि/नियम)कर्ता ब्रह्मा ने विराटपुरुष परमब्रह्म की वेदध्वनि को सुनकर ही प्राप्त किया है। अन्य ऋषियों एवं ऋषिकाओं ने भी इस साहित्य को श्रवण-परम्परा से ही ग्रहण किया था तथा आगे की पीढ़ियों में भी ये श्रवण परम्परा द्वारा ही स्थान्तरित किये गए। इस परम्परा को श्रुति परम्परा भी कहा जाता है तथा श्रुति परम्परा पर आधारित होने के कारण ही इसे श्रुति साहित्य भी कहा जाता है। वेदों और उनसे संबंधित ग्रंथों का संग्रह है, जो हिंदू धर्म का आधार है। इसमें चार वेद (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, और अथर्ववेद), ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक और उपनिषद शामिल हैं। यह साहित्य प्राचीन भारत की संस्कृति, दर्शन, और धार्मिक मान्यताओं को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत है। वेद धार्मिक पाठ के बड़े निकाय हैं जो वैदिक संस्कृत से बने हैं और प्राचीन भारत में उत्पन्न हुए हैं। वे हिंदू धर्म के सबसे पुराने ग्रंथ और संस्कृत साहित्य की सबसे पुरानी परत बनाते हैं। कहा जाता है कि वेद एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक संचरण के माध्यम से पारित हुए हैं। इसलिए इन्हें श्रुति भी कहा जाता है। वैदिक साहित्य में चार वेद शामिल हैं, अर्थात्: ऋग्वेद , सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद। प्रत्येक वेद के मंत्र पाठ को संहिता कहा जाता है।

कूट शब्द – वेद , आयुर्वेद , विज्ञान , प्रौद्योगिकी , स्वास्थ्य , शिल्पशास्त्र , आधुनिक विज्ञान।

जहाँ श्रुति का अर्थ है 'वह जो सुना जाता है', वहीं स्मृति का अर्थ है 'वह जो स्मरण किया जाता है'। श्रुतियों को मूलतः दिव्य माना जाता है। प्राचीन ऋषियों द्वारा ईश्वर द्वारा प्रकट की गई वाणी के रूप में वर्णित, श्रुतियाँ स्मृतियों से अधिक प्रामाणिक मानी जाती हैं। श्रुति साहित्य को प्राकृतिक नियमों, ईश्वर के नियमों या ब्रह्मांड के मूलभूत सत्यों के समान माना जाता है।

स्मृतियाँ भी ऋषियों द्वारा लिखी गई थीं, लेकिन वे वेदों की अपेक्षा स्मृति पर आधारित हैं। ये वेदों के मूल भाग के पूरक हैं, प्रकृति में अधिक लचीले हैं, और इनकी व्याख्या परिस्थितियों, अर्थात् देश (स्थान), काल (समय) और पात्र (व्यक्तित्व) के संदर्भ में की जानी चाहिए।

जहाँ श्रुति साहित्य में मुख्यतः वेद और उपनिषद शामिल हैं, वहीं स्मृति साहित्य के कई और उपविभाग हैं और इसमें अधिकांश हिंदू धर्मग्रंथ शामिल हैं। स्मृति साहित्य को इतिहास, पुराण, आगम, दर्शन, धर्मशास्त्र, उपवेद, वेदांग और अनेक भक्ति साहित्य में विभाजित किया गया है।श्रुति साहित्य

चार वेद और उनके उपविभाग

1) ऋग्वेद

यह सबसे प्राचीन लिखित वैदिक ग्रंथ है। इसे आगे 10 मंडलों (विभागों) में विभाजित किया गया है। दूसरे से सातवें मंडल सबसे प्रारंभिक हैं। पहला और दसवाँ मंडल सबसे नवीनतम हैं। ऋग्वेद में 1028 सूक्त हैं और इसमें मुख्य रूप से सांसारिक समृद्धि की प्रार्थनाएँ शामिल हैं।

ऋग्वेद में वर्णित प्रमुख ऋषि वशिष्ठ, वामदेव और गौतम हैं। जिन प्रमुख देवताओं का उल्लेख किया गया है वे हैं इंद्र, अग्नि, वरुण, रुद्र और उषा।

2) सामवेद

साम का अर्थ है राग या गीत। इस वेद में 16,000 राग और रागिनियाँ हैं। 'मंत्रों की पुस्तक' के रूप में भी जाना जाने वाला सामवेद प्राचीन काल में भारतीय संगीत के विकास और गौरव का प्रमाण है।

3) यजुर्वेद

यज्ञ का अर्थ है बलिदान या पूजा। यह वेद मुख्यतः विभिन्न यज्ञों के अनुष्ठानों और मंत्रों से संबंधित है। यह यज्ञों के संचालन के निर्देश देता है। यजुर्वेद की दो प्रमुख शाखाएँ हैं, शुक्ल और कृष्ण।

4) अथर्ववेद

ब्रह्मवेद के नाम से भी जाना जाने वाला अथर्ववेद, प्राचीन लोक धार्मिक मान्यताओं पर आधारित है। इस ग्रंथ में जादुई मंत्रों और मन्त्रों का उल्लेख है। ऐसा कहा जाता है कि इस ग्रंथ की रचना मुख्यतः आम लोगों ने की थी। इसमें उत्तर वैदिक काल के पारिवारिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन की जानकारी के साथ-साथ 99 रोगों का उपचार भी शामिल है।

स्मृति साहित्य

इतिहास (महाकाव्य)

इतिहास का शाब्दिक अर्थ है 'इतिहास'। दो प्रसिद्ध हिंदू महाकाव्य, रामायण और महाभारत, इतिहास का हिस्सा हैं।

महाभारत

वेद व्यास द्वारा रचित महाभारत में मूलतः 8800 श्लोक थे और इसे 'जय' कहा जाता था। बाद में कुछ श्लोक जोड़कर इसे 22,000 श्लोकों का कर दिया गया और इस साहित्य को 'भारत' कहा गया। इसके अंतिम संस्करण में इसमें 1,00,000 श्लोक थे और इसे 'महाभारत' के नाम से जाना जाता है।

महाभारत में वर्णित घटनाएँ द्वापरयुग से संबंधित हैं। प्रसिद्ध भगवद्गीता भी महाभारत का ही एक भाग है।

रामायण

इसे आदिकाव्य कहा जाता है और इसकी रचना महर्षि वाल्मीकि ने की थी। रामायण में 24,000 श्लोक हैं और इसमें वर्णित घटनाएँ त्रेतायुग से संबंधित हैं।

पुराणों

शाब्दिक अर्थ में प्राचीन, पुराणों में अधिकांशतः विभिन्न देवताओं और पूजाओं से संबंधित कथाएँ होती हैं। ये पुस्तकें जनसाधारण के लिए हैं, जो वेदों और उपनिषदों की जटिल अवधारणाओं को कथाओं और दृष्टांतों के माध्यम से समझाती हैं।

भगवान कृष्ण की कथा वाला प्रसिद्ध भागवत पुराण (श्रीमद्भागवतम्) भी इसका एक भाग है। अन्य उदाहरणों में गरुड़ पुराण, विष्णु पुराण, शिव पुराण और पद्म पुराण शामिल हैं।

वेदों में स्वास्थ्य -

प्राचीन काल में रोगों के उपचार की प्रकृति भारत के कई गौरवशाली दावों में से एक आयुर्वेद नामक प्राचीन चिकित्सा विज्ञान है। यह एक ऐसी चिकित्सा पद्धति है जो अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए जड़ी-बूटियों पर निर्भर करती है। प्राकृतिक चिकित्सा की पाँच हज़ार साल पुरानी इस प्रणाली की उत्पत्ति भारत की प्राचीन वैदिक संस्कृति में हुई थी। भारतीय साहित्य के सबसे प्राचीन अभिलेख वेद हैं। चार वेद हैं - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। वेदों में आयुर्वेदिक उद्धरण भी शामिल हैं।

वैदिक ऋचाओं के संग्रह को संहिता कहते हैं। वैदिक मंत्रों की व्याख्या को ब्राह्मण कहते हैं। ब्राह्मण तीन उप-वर्गों में विभाजित हैं - ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद। गद्य में लिखे गए ये धर्मशास्त्रीय प्रवचन यज्ञ अनुष्ठानों पर चर्चा करते हैं। प्रत्येक वेद का अपना ब्राह्मण है। प्रत्येक वेद का अपना आरण्यक है। वेदों के अंतिम भाग, 108 उपनिषद, आध्यात्मिक ज्ञान से संबंधित हैं।

वैदिक युग को दो अलग-अलग कालखंडों में वर्गीकृत किया गया है, अर्थात् प्रारंभिक और उत्तर -वैदिक काल। वैदिक संहिताओं में रोगों और औषधियों से संबंधित प्रचुर सामग्री है। इतनी विविधता का दावा करने वाली सामग्री की इतनी प्रचुरता को भारतीय चिकित्सा विज्ञान की अखंड परंपरा से अलग करके नहीं देखा जा सकता। इन्हीं वैदिक सामग्रियों से आयुर्वेद का विकास हुआ।

वैदिक स्रोत चिकित्सा परंपरा की एक सतत और सतत धारा का पता लगाते हैं। ये स्रोत हमें बताते हैं कि सैकड़ों चिकित्सक और हज़ारों औषधियाँ, जैसे जड़ी-बूटियाँ और पौधे, मौजूद थे। यह खंड वैदिक चिकित्सा परंपरा का संक्षिप्त लेकिन व्यापक इतिहास प्रस्तुत करता है। किसी भी रोग के कारण जहाँ शरीर में केन्द्रित विकार होते हैं वहाँ उससे बढ़कर वहम या मानसिक विचार कारण होते हैं। जहरीले साँप कभी ही काटा करते हैं परन्तु भय है हमें साँप ने काट लिया है अब हम बच नहीं सकते, इन विचारों से सैकड़ों मौतें हर साल होती हैं। रोग बहुतों को केवल वहम से हो जाता हैं। ऐसी दशा में यदि हम किसी प्रकार रोगी के दिल में यह विश्वास जमा दें कि रोग कुछ नहीं है, वह तो तुम्हें है ही नहीं, तो बहुत से रोगी बिना चिकित्सा के ठीक हो सकते हैं। चिकित्सा प्रारम्भ करने से पूर्व मानसिक चिकित्सक को चाहिए कि वह रोगी में अपने प्रति विश्वास पैदा करे तथा उसके मन को अपनी ओर आकर्षित करे। उसे शाँतिपूर्वक सामने बैठाकर कहे कि-

यद्वो मनः परगतं यद् बद्धमिह वेह वा, तद्व आवर्तयामसि मयिषों रमताँ मनः।

अर्थात् मेरे प्यारे रोगी! जो तुम्हारा मन कहीं दूर गया हो या इधर-उधर व्यर्थ की बातों में फंसा हो उसे मैं अपनी ओर लाता हूँ-तुम मेरी बातों को ध्यान पूर्वक सुनो-मैं तुम्हारे रोग को अवश्य ही ठीक कर दूँगा। उसे चिकित्सक कहे कि-

“अहं गृह्णामि मनसा मनाँसि मम चित्तमनुचित्ते भिरेत। मम वशेषु हृदयानि वः कृणोमि मम यातमनु वर्त्मान एत।।”

मैं तुम्हारे मन को अपने मन के अनुकूल बनाता हूँ, तुम अपने चित्त को मेरे अनुकूल बनाओ और मेरी विचारधारा के अनुकूल अपनी विचारधारा करो, तुम्हारे इस शरीर और मन पर तुम्हारा अधिकार नहीं रहा, अब तो इस पर मेरा अधिकार है और मैं जैसा चाहूँगा वैसा तुम्हें चलाऊंगा। तुम मेरे आदेशों को सुनो और उन पर चलो-तुम्हें उस पर चलना पड़ेगा।

वेद प्राचीन काल से ही मानव-सभ्यता के प्रकाश-स्तम्भ रहे हैं। वेद की परम्परा में रुद्र को प्रथम वैद्य स्वीकार किया गया है। ‘यजुर्वेद’ में कहा गया है कि 'प्रथमो दैव्यों भिषक'।[1] तथा इसी प्रकार ऋग्वेद में भी उल्लिखित है कि ‘भिषक्तमं त्वां भिषजां शृणोमि'।[2] और आयुर्वेद ग्रन्थो की परम्परा में ब्रह्मा आयुर्वेद का प्रथम उपदेष्टा है।

वेदों में अश्विनों और रुद्रदेवता के अतिरिक्त अग्नि, वरुण, इन्द्र, अप् तथा मरुत् को भी 'भिषक्' शब्द से अभिनिहित किया गया है। परन्तु मुख्य रूप से इस शब्द का सम्बन्ध रुद्र और अश्विनौ के साथ ही है। अतः वेद आयुर्वेदशास्त्र के लिए एक महत्त्वपूर्ण संकेतक तथा स्रोत हैं।

ऋग्वेद में आयुर्वेद-

आयुर्वेद के महत्वपूर्ण तथ्यों का वर्णन ऋग्वेद में उपलब्ध है। ऋग्वेद में आयुर्वेद का उद्देश्य, वैद्य के गुण-कर्म, विविध औषधियों के लाभ तथा शरीर के अंग और अग्निचिकित्सा, जलचिकित्सा, सूर्यचिकित्सा, शल्यचिकित्सा, विषचिकित्सा, वशीकरण आदि का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है।[3] ऋग्वेद में 67 औषधियों[4] का उल्लेख मिलता हैं। अतः आयुर्वेद की दृष्टि से ऋग्वेद बहुत उपयोगी है।

यजुर्वेद में आयुर्वेद

यजुर्वेद में आयुर्वेद से सम्बन्धित निम्नांकित विषयों का वर्णन प्राप्त होता है : विभिन्न औषधियों के नाम, शरीर के विभिन्न अंग, वैद्यक गुण-कर्म चिकित्सा, नीरोगता, तेज वर्चस् आदि। इसमें 82 औषधियों का उल्लेख दिया गया है।

सामवेद में आयुर्वेद

आयुर्वेद के अध्ययन के रूप में सामवेद का योगदान कम है। इसमें मुख्यतया आयुर्वेद से सम्बन्धित कुछ मन्त्रा में वैद्य, तथा अत्यल्प रोगों की चिकित्सा का वर्णन प्राप्त होता है।

अथर्ववेद में आयुर्वेद

आयुर्वेद की दृष्टि से अथर्ववेद का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसमें आयुर्वेद के प्रायः सभी अंगों एवं उपांगों का विस्तृत विवरण मिलता है। अथर्ववेद ही आयुर्वेद का मूल आधार है। अथर्ववेद में आयुर्वेद से सम्बन्धित विभिन्न विषयों का वर्णन उपलब्ध है जिनमें से मुख्य है- 'वैद्य के गुण, कर्म या भिषज, भैषज्य, दीर्घायुष्य, बाजीकरण, रोगनाशक विभिन्न मणियां, प्राणचिकित्सा, शल्यचिकित्सा, वशीकरण, जलचिकित्सा, सूर्यचिकित्सा तथा विविध औषधियों के नाम, गुण, कर्म आदि।[5]

आयुर्वेद को अर्थवेद में 'भेषज' या 'भिषग्वेद' नाम से जाना जाता है।[6] गोपथ ब्राह्मण में भी अथर्ववेद के मंत्रों को आयुर्वेद से सम्बन्धित बताया गया है। शतपथ ब्राह्मण में यजुर्वेद के एक मंत्र की व्याख्या में प्राण को 'अथर्वा' कहा गया है। इसका अर्थ यह है कि प्राणविद्या या जीवनविद्या आथर्वण विद्या ही है।[7] गोपथ ब्राह्मण के अनुसार ''अंगिरस् का सीधा सम्बन्ध आयुर्वेद तथा शरीर विज्ञान से है। अंगों के रसों अर्थात् तत्त्वों का वर्णन जिसमें प्राप्त होता है वह अंगिरस् कहा जाता है। अंगों से जो रस निकलता है वह अंगरस है और उसी को अंगिरस् कहा जाता है।अथर्ववेद को वैदिक जगत् में क्षत्रवेद, ब्रह्मवेद, भिषग्वेद तथा अर्थिरोवेद इत्यदि नामों से भी जाना जाता है।

स्पष्ट है कि वेदों में आयुर्वेद से सम्बन्धित सैकड़ों मन्त्रों का वर्णन है, जिसमें विभिन्न रोगों की चिकित्सा का उल्लेख है। ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद - इन चारों वेदों में अथर्ववेद को ही आयुर्वेद की आत्मा माना गया है। अथर्ववेद में स्वस्त्ययन मंगलकर्म, उपवास, बलिदान, होम, नियम, प्रायश्चित और मन्त्र आदि से भी चिकित्सा करने को कहा गया है। अथर्ववेद में सर्वाधिक 289 औषधियों का उल्लेख किया गया है। इस प्रकार ज्ञात होता है कि आयुर्विषययक औषधियों का विस्तृत विवरण अथर्ववेद में ही पाया जाता है।

भृगुशिल्पसंहिता' में १६ विज्ञान तथा ६४ प्रौद्योगिकियों का वर्णन है। इंजीनियरी प्रौद्योगिकियों के तीन 'खण्ड' होते थे। 'हिन्दी शिल्पशास्त्र' नामक ग्रन्थ में कृष्णाजी दामोदर वझे ने ४०० प्रौद्योगिकी-विषयक ग्रन्थों की सूची दी है, जिसमें से कुछ निम्नलिखित हैं-

विश्वमेदिनीकोश, शंखस्मृति, शिल्पदीपिका, वास्तुराजवल्लभ, भृगुसंहिता, मयमतम्, मानसार, अपराजितपृच्छा, समरांगणसूत्रधार, कश्यपसंहिता, वृहतपराशरीय-कृषि, निसारः, शिगृ, सौरसूक्त, मनुष्यालयचंद्रिका, राजगृहनिर्माण, दुर्गविधान, वास्तुविद्या, युद्धजयार्णव।

प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित १८ प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में से 'कश्यपशिल्पम्' सर्वाधिक प्राचीन मानी जाती है।

प्राचीन खनन एवं खनिकी से सम्बन्धित संस्क्रित ग्रन्थ हैं- 'रत्नपरीक्षा', लोहार्णणव, धातुकल्प, लोहप्रदीप, महावज्रभैरवतंत्र तथा पाषाणविचार। 'नारदशिल्पशास्त्रम' शिल्पशास्त्र का ग्रन्थ है।

प्राचीन हिंदू परंपराओं में निहित वैदिक अनुष्ठान आधुनिक भारत में भी गहरा महत्व रखते हैं। हिंदू धर्म के सबसे प्राचीन पवित्र ग्रंथों, वेदों से उत्पन्न, ये अनुष्ठान विस्तृत अनुष्ठानों से लेकर दैनिक अर्पण तक, कई प्रकार की प्रथाओं को समाहित करते हैं। आधुनिकीकरण की तीव्र गति और डिजिटल तकनीक के उदय के बावजूद, वैदिक अनुष्ठान भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन का एक अभिन्न अंग बने हुए हैं। यह ब्लॉग समकालीन भारत में वैदिक अनुष्ठानों के स्थायी महत्व, समाज पर उनके प्रभाव और आधुनिक संदर्भों में उनके अनुकूलन की पड़ताल करता है। वैदिक अनुष्ठानों की उत्पत्ति वैदिक काल (1500-500 ईसा पूर्व) से मानी जाती है, जब वेदों की रचना हुई थी। ये अनुष्ठान ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखने, देवताओं का सम्मान करने और व्यक्ति व समाज की भलाई सुनिश्चित करने के लिए बनाए गए थे। ये अनुष्ठान विस्तृत थे, जिनमें विस्तृत पाठ, आहुति और बलिदान शामिल थे, और इन्हें वैदिक मंत्रों और प्रक्रियाओं में पारंगत पुजारियों द्वारा संपन्न किया जाता था।

समय के साथ, जहाँ कुछ अनुष्ठान विकसित हुए हैं या कम हुए हैं, वहीं कई अनुष्ठान आज भी जारी हैं और बदलते सामाजिक मानदंडों के अनुरूप ढल गए हैं। वैदिक अनुष्ठानों के मूल सिद्धांत—जैसे धर्म (कर्तव्य), कर्म (कार्य) और भक्ति का महत्व—आज भी समकालीन साधकों के साथ प्रतिध्वनित होते रहते हैं। तकनीकी प्रगति और सामाजिक मूल्यों में बदलाव के बावजूद, वैदिक अनुष्ठान कई भारतीयों के जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। ये अनुष्ठान प्राचीन परंपराओं से निरंतरता और जुड़ाव का एहसास दिलाते हैं, अतीत और वर्तमान के बीच एक कड़ी प्रदान करते हैं। वैदिक अनुष्ठान अक्सर व्यक्तिगत और पारिवारिक समारोहों का आधार बनते हैं। दैनिक क्रियाएँ, जैसे प्रातःकालीन प्रार्थना (पूजा) और देवताओं को भोग लगाना, कई भारतीय घरों में आम हैं। ऐसा माना जाता है कि ये अनुष्ठान आध्यात्मिक लाभ प्रदान करते हैं, मानसिक शांति प्रदान करते हैं और अनुशासन की भावना को बढ़ावा देते हैं।

जन्म, विवाह और मृत्यु जैसी महत्वपूर्ण जीवन की घटनाओं को विस्तृत वैदिक समारोहों द्वारा चिह्नित किया जाता है। उदाहरण के लिए, हिंदू विवाह दो व्यक्तियों के पवित्र बंधन में मिलन के प्रतीक अनुष्ठानों के साथ मनाए जाते हैं, जिनमें वैदिक ग्रंथों के तत्व शामिल होते हैं जो कर्तव्य, प्रेम और प्रतिबद्धता पर ज़ोर देते हैं। व्यक्तिगत प्रथाओं के अलावा, वैदिक अनुष्ठान सामुदायिक और सामाजिक परिवेश में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। त्योहारों और धार्मिक आयोजनों में अक्सर सार्वजनिक अनुष्ठान शामिल होते हैं जो लोगों को एक साथ लाते हैं, सांप्रदायिक बंधनों और साझा मूल्यों को मज़बूत करते हैं। दिवाली, होली और नवरात्रि जैसे त्योहार वैदिक परंपराओं पर आधारित अनुष्ठानों के साथ मनाए जाते हैं, और विविध पृष्ठभूमि के प्रतिभागियों को आकर्षित करते हैं।

भारत भर के मंदिर और धार्मिक संस्थान नियमित रूप से वैदिक अनुष्ठान करते हैं, जो भक्तों और पर्यटकों दोनों को आकर्षित करते हैं। ये अनुष्ठान, चाहे दैनिक हों या विशेष अवसरों पर, स्थानीय समुदायों की सांस्कृतिक जीवंतता और आध्यात्मिक जीवन में योगदान करते हैं। आधुनिक भारत में वैदिक अनुष्ठानों का एक प्रमुख महत्व सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में उनकी भूमिका है। तेज़ी से बदलती दुनिया में, ये अनुष्ठान प्राचीन ज्ञान और प्रथाओं के भंडार के रूप में कार्य करते हैं। ये उन पारंपरिक मूल्यों, रीति-रिवाजों और प्रथाओं को बनाए रखने में मदद करते हैं जो पीढ़ियों से चली आ रही हैं।

शैक्षणिक संस्थान और विद्वान वैदिक ग्रंथों और अनुष्ठानों का भी अध्ययन करते हैं, जिससे भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत की व्यापक समझ विकसित होती है। यह विद्वत्तापूर्ण जुड़ाव सुनिश्चित करता है कि वैदिक अनुष्ठानों में निहित ज्ञान की सराहना और सम्मान होता रहे। आधुनिक भारत में, वैदिक अनुष्ठानों को अक्सर समकालीन मूल्यों और जीवन शैली के साथ एकीकृत किया जाता है। उदाहरण के लिए, पर्यावरण के प्रति जागरूकता के कारण अनुष्ठानों में पर्यावरण-अनुकूल प्रथाओं को अपनाया गया है, जैसे कि प्रसाद के लिए जैव-निम्नीकरणीय सामग्रियों का उपयोग और अपशिष्ट को कम करना। ये अनुकूलन पारंपरिक प्रथाओं के सार को बनाए रखते हुए पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति बढ़ती जागरूकता को दर्शाते हैं।

इसके अलावा, वैदिक अनुष्ठानों के सिद्धांत, जैसे कि सचेतनता, अनुशासन और नैतिक जीवन, व्यक्तिगत कल्याण और आत्म-सुधार के आधुनिक मूल्यों के अनुरूप हैं। कई व्यक्तियों का मानना है कि ये प्राचीन प्रथाएँ समग्र स्वास्थ्य और सचेतनता के समकालीन दर्शन के अनुरूप हैं।

प्रौद्योगिकी-

महर्षि के वैदिक विज्ञान को, सर्वप्रथम, ज्ञान प्राप्ति की एक विश्वसनीय विधि के रूप में, शब्द के पूर्णतम अर्थ में एक विज्ञान के रूप में समझा जाना चाहिए। यह ज्ञान के एकमात्र आधार के रूप में अनुभव पर निर्भर करता है, न कि केवल इंद्रियों द्वारा प्राप्त अनुभव पर, बल्कि उस अनुभव पर जो तब प्राप्त होता है जब मन पूर्णतः शांत होकर एकीकृत क्षेत्र के साथ एकाकार हो जाता है। आधुनिक विज्ञानों के संदर्भ में परीक्षित यह विधि, प्रकृति के सभी नियमों के एकीकृत क्षेत्र की खोज का एक प्रभावी साधन सिद्ध होती है। इस विधि के आधार पर एकीकृत क्षेत्र का पूर्ण ज्ञान संभव हो पाता है। चेतना के अन्वेषण के माध्यम से प्रत्यक्ष अनुभव के स्तर पर व्यक्तिपरक रूप से और आधुनिक विज्ञान की अन्वेषणात्मक विधियों के माध्यम से वस्तुनिष्ठ रूप से एकीकृत क्षेत्र को जानना संभव है। वैदिक विज्ञान चेतना, या ज्ञाता का पूर्ण ज्ञान, ज्ञात वस्तु का पूर्ण ज्ञान और जानने की प्रक्रिया का पूर्ण ज्ञान प्रदान करता है। एकीकृत क्षेत्र को जानने में, तीनों - ज्ञाता, ज्ञात और जानने की प्रक्रिया - ज्ञान की एक एकीकृत अवस्था में एकाकार हो जाते हैं जिसमें तीनों एक ही होते हैं।

महर्षि ने एकीकृत क्षेत्र के व्यवस्थित अन्वेषण हेतु एक तकनीक विकसित और उपलब्ध कराई है। यह तकनीक एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा कोई भी व्यक्ति एकीकृत क्षेत्र तक पहुँच सकता है और चेतना की सरलतम एवं एकीकृत अवस्था के अनुभव के माध्यम से उसका अन्वेषण कर सकता है। जैसे-जैसे अनुभव का यह क्षेत्र सर्वसुलभ होता जाता है, एकीकृत क्षेत्र एक प्रत्यक्ष अनुभव के रूप में उपलब्ध होता जाता है जो सार्वभौमिक ज्ञान का आधार बनता है। एकीकृत क्षेत्र तक पहुँच प्राप्त करने की तकनीक को एकीकृत क्षेत्र की महर्षि तकनीक कहा जाता है, और इस अनुभव पर आधारित विज्ञान, जो आधुनिक विज्ञान और वैदिक विज्ञान को ज्ञान के एक एकीकृत निकाय में जोड़ता है, सृजनात्मक बुद्धि का विज्ञान कहलाता है।

महर्षि एकीकृत क्षेत्र के ज्ञान और तकनीक को जीवन के व्यावहारिक लाभ के लिए लागू करने के लिए गहन रूप से प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने इस ज्ञान को स्वास्थ्य, शिक्षा, पुनर्वास और विश्व शांति सहित मानवीय सरोकारों के प्रत्येक प्रमुख क्षेत्र में लागू करने के लिए कार्यक्रम विकसित किए हैं। एकीकृत क्षेत्र की महर्षि तकनीक के इन अनुप्रयोगों ने इसे अनुभवजन्य सत्यापन के लिए खुला छोड़ दिया है और मानव जाति के लिए इसके व्यावहारिक लाभ को प्रदर्शित किया है। सैकड़ों वैज्ञानिक अध्ययनों ने इसकी उपयोगिता को पहले ही स्थापित कर दिया है। इन परिणामों से यह स्पष्ट है कि एकीकृत क्षेत्र की महर्षि प्रौद्योगिकी वर्तमान अनुभवजन्य विज्ञान पर आधारित प्रौद्योगिकियों की तुलना में कहीं अधिक लाभदायक है; यह युद्ध, आतंकवाद, अपराध, अस्वस्थता और सभी प्रकार के मानवीय कष्टों को कम करने और यहां तक कि समाप्त करने का वादा करती है।

एकीकृत क्षेत्र की महर्षि तकनीक, वैदिक विज्ञान का व्यावहारिक मूल्य, ज्ञान प्राप्ति के तरीकों में एक महान प्रगति का प्रतिनिधित्व करता है। पूर्व विज्ञान इंद्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान की एक सीमित सीमा पर आधारित था। यह नई तकनीक मानवजाति के लिए अनुभव के एक ऐसे क्षेत्र का द्वार खोलती है जिसका महत्व कहीं अधिक गहरा और दूरगामी है। यह प्रकृति के नियमों की खोज का एक नया स्रोत हमारी पहुँच में लाती है जो आधुनिक विज्ञान की विधियों से कहीं आगे है, फिर भी इन विधियों का पूरक है।

आधुनिक विज्ञान और वैदिक विज्ञान, एक साथ खोजे जाने पर, समकालीन विश्व में ज्ञान की एक मौलिक रूप से नई सीमा का निर्माण करते हैं, जो मानवजाति के लिए जानने और प्राप्त करने की संभावनाओं के द्वार खोलते हैं, जो वर्तमान अवधारणाओं से कहीं आगे तक फैले हुए हैं, और जो वास्तविकता के वर्तमान प्रतिमानों के पुनर्मूल्यांकन और मानव ज्ञान के स्रोतों और सीमाओं की पुरानी अवधारणाओं के पुनर्मूल्यांकन की माँग करते हैं।

निष्कर्ष -

यह परिचयात्मक निबंध एकीकृत क्षेत्र क्या है, वैदिक विज्ञान क्या है, और वैदिक विज्ञान और आधुनिक विज्ञान कैसे संबंधित हैं, इसकी प्रारंभिक समझ प्रदान करेगा। यह उन मूलभूत अवधारणाओं और शब्दावली को भी परिभाषित करता है जिनका इस पत्रिका में बार-बार उपयोग किया जाएगा और इस नई तकनीक के व्यावहारिक अनुप्रयोगों का सर्वेक्षण करता है। हम आधुनिक विज्ञान में समझे गए एकीकृत क्षेत्र के विवरण से शुरू करते हैं। वैदिक विज्ञान और शास्त्र, शैक्षिक विज्ञानों की जीवंत धारा में गहराई से निहित हैं। वेद, उपनिषद, आरण्यक, संहिताएँ, वेदांग आदि वैदिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञानों में इसके वास्तविक अनुप्रयोग का संग्रह हैं। वेदों में रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, खगोल विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, अभियांत्रिकी, कंप्यूटर विज्ञान और ब्रह्मांड विज्ञान का संचय वर्णित है। श्रीमद् भगवद् गीता विश्व के प्रति

शैक्षिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। आधुनिकीकरण वह परिवर्तन है जो वैदिक विज्ञान की घटनाओं को आधुनिक विज्ञान में लाता है। विज्ञान की आधुनिक अवधारणाएँ जैसे खगोल विज्ञान में सौर ऊर्जा, ग्रहों की गति, भौतिक विज्ञान में प्रकाश की गति, पदार्थ की उत्पत्ति, इंद्रधनुष, अभियांत्रिकी में मशीनरी, वैमानिकी में विमानों की सुरक्षा, रसायन विज्ञान में ज्वाला परीक्षण, गर्म करने पर क्षरण और क्षति, लवण, धातु विज्ञान में कोष्ठि यंत्र, चिकित्सा विज्ञान में नाक की प्लास्टिक सर्जरी, टेस्ट ट्यूब बेबी, जीव विज्ञान में परासरण, कृषि विज्ञान में बीजरहित फल-सब्जियों आदि का वर्णन वैदिक शास्त्रों में मिलता है। इस प्रकार की अवधारणाओं को आज के विज्ञान पाठ्यक्रम में भारतीय वैदिक दृष्टि से शामिल किया जाना चाहिए। आधुनिक समय में नासा भी खगोलीय अनुसंधानों के नए आविष्कारों में वैदिक विज्ञान और वैदिक गणित का उपयोग कर रहा है। ऋषि पाणिनि ने व्याकरण शास्त्र को अष्टाध्यायी के रूप में दिया था जो कंप्यूटर विज्ञान की कोडिंग भाषा में प्रयुक्त होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

- Sanskrit Sahitya Ka Itihas by Dr. Preeti Prabha Goyal Publisher - Rajasthani Granthagar
- Vaidik Saahity Ka Itihaas by Dr. Bheshraj Sharma Publisher - Hansa Prakashan
- Presentation of Vedic Literature Vedic Literature and Culture by Kapildev Dwivedi Publisher - Vaidik Pustakaly
- Vaidik Gyan Vigyan Kosh by Manudutt Pathak Publisher - Rajpal & Sons (Rajpal Publishing
- वेदों में सम्पूर्ण स्वास्थ्य तथा एकेश्वरवाद by Dr.SHOBHA AGRAWAL CHILBIL Publisher - Hansa Prakashan
- Vedic Wandmaya Me Vigyan Aur Prodhogiki by Priyanka Chohan Publisher - Prakash Book Depot
- Vedon Mein Ayurved Publisher - visva bharati anusandhan Parishad
- Presentation of Vedic Literature Science in Vedas by Kapildev Dwivedi Publisher Vaidik Pustakaly